GURU GOBIND SINGH PUBLIC SCHOOL, CHAS

SPECIAL ASSIGNMENT-2 [2020-21]

CLASS X

SANSKRIT

प्रिय छात्रों, मुझे उम्मीद है कि आप सब इस "कोरोनावायरस" नामक 'महामारी' के समय में स्थिर होकर अपने-अपने घरों में स्वस्थ एवं सकुशल हैं। आज मुझे आप लोगों से बात करके अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। आप सब का इस नई कक्षा में स्वागत है। आज हम सब 'संधि' इस पाठ के अंतर्गत 'व्यंजन संधि' और उनके भेदों को अच्छी तरह समझेंगे। बच्चों, आप सब इसे अपनी संस्कृत की कक्षा ही समझें और मुझे निःसंकोच अपनी समस्याओं से (व्हाट्सएप द्वारा) अवगत कराएं।

1 सन्धिः

परिभाषा– अत्यंत समीपवर्ती दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से, किसी नियम के अंतर्गत होने वाले परिवर्तन को **'सन्धि'** कहते हैं।

जैसे– विद्या + आलयः → आ + आ = आ → विद्यालयः

रमा + ईशः → आ + ई = ए → रमेशः

तत् + शक्यम् → त् + श् = च्छ् → तच्छक्यम्

सन्धि के प्रकार

- **स्वर सन्धि** (स्वरों में परिवर्तन)
- **व्यञ्जन सन्धि** (व्यञ्जनों में परिवर्तन)
- **विसर्ग सन्धि** (विसर्ग में परिवर्तन)

नवीन पाठ्यक्रमानुसार यहाँ पर केवल व्यंजन एवं विसर्ग संधियाँ ही बताई जा रही हैं।

व्यञ्जन सन्धिः

व्यंजन संधि के निम्नलिखित भेद होते हैं–

व्यञ्जन सन्धिः

- तुगागम
- 'म्' को अनुस्वार (ं)
- जश्त्व
- प्रथम वर्ण को पञ्चम वर्ण में परिवर्तन

क्योंकि व्यंजनों के रूपों में अनेक परिवर्तन होते हैं, अतः व्यंजन संधि के अनेक भेद भी हैं। अब क्रमशः इन्हीं का वर्णन किया जाएगा।

(*i*) तुगागम (तुक्-आगम) सन्धिः

संस्कृत साहित्य में 'आगम' व 'आदेश' का बड़ा महत्त्व होता है। प्रचलन के अनुसार **'आगमः मित्रवत्'** अर्थात् आगम मित्र की तरह बिना किसी वर्ण का लोप किए ही शब्दों के बीच में आ जाता है।

(क) 'तुक्' आगम की विधि ('शि तुक्' पा०अ० 8.3.31)

शब्द के अंत में स्थित 'न्' के पश्चात् यदि 'श्' हो, तो उन दोनों के बीच में विकल्प से 'तुक्' का आगम होता है अर्थात् 'तुक्' का 'त्' जुड़ जाता है। साथ ही 'श्' को 'छ्' और 'श्चुत्व-सन्धि' का नियम भी लगता है। जैसे–

गच्छन् + शेते = गच्छञ्च्छेते, गच्छञ्छेते

तिष्ठन् + शब्दायते = तिष्ठञ्च्छब्दायते, तिष्ठञ्छब्दायते

तिष्ठन् + शेते = तिष्ठञ्च्छेते, तिष्ठञ्छेते

सन् + शम्भुः = सञ्च्छम्भुः, सञ्छम्भुः

(ख) 'छ्' से पहले 'च्' का आगम (छे च 6.1.7.3)

यदि ह्रस्व स्वर के बाद 'छ्' हो, तो 'तुक्' का आगम होता है। 'तुक्' का 'त्' शेष रहता है। श्चुत्व सन्धि से 'त्' को 'च्' हो जाता है। जैसे–

परि	+	छिदः	=	परि	+	तुक्	+	छिदः	=	परिच्छिदः
अनु	+	छेदः	=	अनु	+	तुक्	+	छेदः	=	अनुच्छेदः
वृक्ष	+	छाया	=	वृक्ष	+	तुक्	+	छाया	=	वृक्षच्छाया
स्व	+	छन्दः	=	स्व	+	तुक्	+	छन्दः	=	स्वच्छन्दः
सन्धि	+	छेदः	=	सन्धि	+	तुक्	+	छेदः	=	सन्धिच्छेदः

यदि पहले शब्द के अंत में दीर्घ स्वर हो और उसके बाद 'छ्' हो, तो 'छ्' से पहले 'च्' को जोड़कर 'च्छ्' बना दिया जाता है।

माता	+	छाया	=	माताच्छाया		लता	+	छाया	=	लताच्छाया
लीला	+	छत्रम्	=	लीलाच्छत्रम्		लक्ष्मी	+	छाया	=	लक्ष्मीच्छाया

(ii) **अनुस्वार सन्धिः (मोऽनुस्वारः)**

'म्' को अनुस्वार (ं) बनाने का नियम–

यदि शब्द के अंत में 'म्' आए और उसके बाद कोई भी व्यञ्जन आए, तो 'म्' को अनुस्वार (ं) हो जाता है। जैसे–

ग्रामम्	+	याति	=	ग्रामं याति		पत्रम्	+	लिखति	=	पत्रं लिखति
हरिम्	+	वन्दे	=	हरिं वन्दे		मधुरम्	+	हसति	=	मधुरं हसति
पाठम्	+	पठति	=	पाठं पठति		भोजनम्	+	खादति	=	भोजनं खादति
कार्यम्	+	करोति	=	कार्यं करोति		सीताम्	+	पश्यति	=	सीतां पश्यति
कर्णम्	+	वदति	=	कर्णं वदति		देवालयम्	+	गच्छति	=	देवालयं गच्छति

(iii) **जशत्व (जश्) सन्धिः (झलां जशोऽन्ते)**

वर्गीय प्रथम अक्षरों को तृतीय वर्ण बनाने का नियम–

यदि प्रथम पद के अन्त में वर्गों के प्रथम अक्षर (क्, च्, ट्, त्, प्) स्थित हों और उसके बाद कोई भी स्वर हो या किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण हो या य्, र्, ल्, व् में से कोई वर्ण हो, तो वर्ग का प्रथम वर्ण उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाएगा। जैसे–

क् को ग्	–	पृथक्	+	उच्यते	= पृथगुच्यते		वाक्	+	ईशः	= वागीशः
च् को ज्	–	अच्	+	अन्तः	= अजन्तः		अच्	+	आदिः	= अजादिः
ट् को ड्	–	स्वराट्	+	गायत्री	= स्वराड्गायत्री		विराट्	+	गायत्री	= विराड्गायत्री
त् को द्	–	दूरात्	+	आगच्छत्	= दूरादागच्छत्		पाठात्	+	दृश्यते	= पाठाद्दृश्यते
प् को ब्	–	अप्	+	जः	= अब्जः		सुप्	+	अन्तः	= सुबन्तः

(iv) **प्रथम वर्ण का पञ्चम वर्ण में परिवर्तन–**

यदि वर्ग के पहले वर्ण के बाद किसी भी वर्ग का पंचम वर्ण हो, तो प्रथम वर्ण उसी वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है। जैसे–

षट्	+	नवतिः	=	षण्णवतिः		षट्	+	नाम्	=	षण्णाम्
सत्	+	नाम	=	सन्नाम		सत्	+	नायिका	=	सन्नायिका
तत्	+	नमति	=	तन्नमति		वाक्	+	मयम्	=	वाङ्मयम्
सत्	+	मतिः	=	सन्मतिः		स्वप्	+	मयम्	=	स्वप्मयम्

अभ्यासप्रश्नाः (व्यञ्जन सन्धिः)

बहुविकल्पीयाः/सैद्धान्तिक-प्रश्नाः

अधोलिखितवाक्येषु रेखाङ्कितपदानां सन्धिं विच्छेदं वा विकल्पेभ्यः चित्वा लिखत–

1. **<u>प्रिय + छात्राः</u> शृण्वन्तु।**
   (क) प्रियछछात्राः (ख) प्रियच्छात्राः (ग) प्रिय्यच्छात्राः (घ) प्रियछात्राः

2. **<u>सन्धिच्छेदः</u> कर्तव्यः।**
   (क) सम् + धिच्छेदः (ख) सन्धित् + छेदः (ग) सन्धि + छेदः (घ) सन्धि + च्छेदः

3. **<u>ग्रामच्छटा</u> द्रष्टुमपि न शक्यते।**
   (क) ग्राम + छटा (ख) ग्रामत् + छटा (ग) ग्रामात् + छटा (घ) ग्रामाता + छटा

4. **सः <u>वृक्ष + छायायाम्</u> उपविशन् अस्ति।**
   (क) वृक्षश्छायायाम् (ख) वृक्षच्छायायाम् (ग) वृक्षछायायाम् (घ) वृक्षे छायायाम्

5. **<u>बदरी + छायायाम्</u> उपविश।**
   (क) बदरीछायायाम् (ख) बदरीच्छायायाम् (ग) बदरच्छायायाम् (घ) बदरछायायाम्

6. **अधोलिखितम् <u>अनुच्छेदं</u> पठत।**
   (क) अनू + छेदम् (ख) अनुः + छेदम् (ग) अनु + छेदम् (घ) अनुच + छेदम्

7. **<u>तन्मे</u> मनः शिवसंकल्पमस्तु।**
   (क) तन् + मे (ख) तत् + मे (ग) तत + मे (घ) तम + मे

8. **<u>चेन्निरर्थकं</u> न व्यतीतव्यम्।**
   (क) चेत् + निरर्थकम् (ख) चेन् + निरर्थकम् (ग) चेन्नि + अर्थकम् (घ) चेन्निर् + अर्थकम्

9. **प्रत्येकम् अयनस्य अवधिः <u>षण्मासाः</u> भवति।**
   (क) षट् + मासाः (ख) षटण + मासाः (ग) षण्म + आसाः (घ) षण् + मासाः

10. **<u>अजादिः</u> व्याकरणस्य अङ्गं वर्तते।**
    (क) अच् + आदिः (ख) अच + आदिः (ग) अज + आदिः (घ) अज् + आदिः

11. **शब्दरूपाः <u>सुप् + अन्ताः</u> भवन्ति।**
    (क) सुबन्ताः (ख) सुपन्ताः (ग) सुभन्ताः (घ) सुफन्ताः

12. **<u>षट् + नवतिः</u> (96) छात्राः परीक्षाम् अयच्छन्।**
    (क) षण्णवतिः (ख) षट्नवतिः (ग) षड्नवतिः (घ) षड्णवमितः

13. **<u>जनानाम् + शब्दाः</u> आकर्णनीयाः।**
    (क) जनानाम्शब्दाः (ख) जनानां शब्दाः (ग) जनानाम् शब्दाः (घ) जनानाञ्शब्दाः

14. **<u>तन्नाम</u> सर्वोच्चं वर्तते।**
    (क) तत् + नाम (ख) तन् + नाम (ग) तद् + नाम (घ) तम् + नाम

15. **कृषकः <u>क्षेत्रं गतः</u> आसीत्।**
    (क) क्षेत्रम् + गतः (ख) क्षेत्रङ् + गतः (ग) क्षेत्रेः + गतः (घ) क्षेत्रन् + गतः

अभ्यास प्रश्ननाम् उत्तराणि

1)ख

2)ग

3)क

4)ख

5)ख

6)ग

7)ख

8)क

9)क

10)क

11)क

12)क

13)ख

14)क
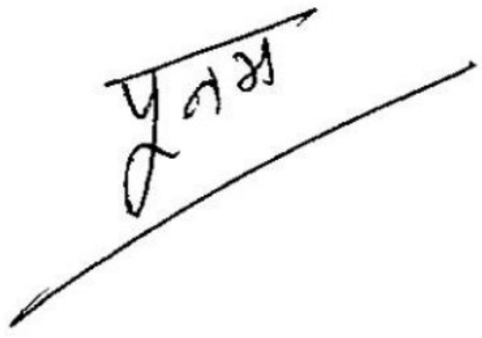
15)क